ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

उत्तराखंड के विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आकांक्षा, अभिवृत्ति एवं शैक्षिक निष्पत्ति के पारस्परिक संबंध और भिन्नताओं का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

*** रोहित पाठक, शोधकर्ता, शिक्षा संकाय   ** डॉ निशा, शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा संकाय,**

सारांश (Abstract)

यह सर्वेक्षणात्मक अध्ययन उत्तराखंड के विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में अध्ययनरत 50 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों (30 विशेष विद्यालय, 20 समावेशी विद्यालय) की आकांक्षा, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच संबंध का अन्वेषण करता है। चार जिलों (देहरादून, हरिद्वार, अल्मोड़ा, नैनीताल) से डेटा संग्रहित किए गए। परिणामों से पता चला कि विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा ($M = 58.47 \pm 8.93$) और शैक्षणिक निष्पत्ति ($M = 68.73 \pm 9.87$) समावेशी विद्यालयों से सांख्यिकीय रूप से अधिक थी। आकांक्षा और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच मजबूत सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.687$, $p = 0.001$) मिला। अभिवृत्ति और निष्पत्ति के बीच भी सकारात्मक संबंध ($r = 0.625$, $p = 0.002$) स्थापित हुआ। अध्ययन दर्शाता है कि विशेषीकृत संसाधन, सहायक प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षित शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। निष्कर्ष समावेशी शिक्षा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सुझाव प्रदान करते हैं।

कीवर्ड्स: दृष्टिबाधित विद्यार्थी, आकांक्षा, अभिवृत्ति, शैक्षणिक निष्पत्ति, समावेशी शिक्षा, उत्तराखंड

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

* रोहित पाठक, शोधकर्ता, शिक्षा संकाय,संस्कृति विश्वविद्यालय,छाता,मथुरा,उत्तर प्रदेश 281401

** डॉ निशा, शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा संकाय, संस्कृति विश्वविद्यालय, छाता, मथुरा, उत्तर प्रदेश 281401

परिचय (Introduction)

विकलांग शिक्षार्थियों की शैक्षणिक सफलता आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गई है। विशेष रूप से दृष्टिबाधित विद्यार्थी समाज के सबसे संवेदनशील समूहों में से एक हैं। संयुक्त राष्ट्र की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में लगभग 253 मिलियन लोग किसी न किसी प्रकार की दृष्टि समस्या से ग्रस्त हैं, जिनमें से भारत का महत्वपूर्ण योगदान है (WHO, 2019)। भारतीय जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, देश में 7.62 मिलियन दृष्टिबाधित व्यक्ति हैं।

उत्तराखंड राज्य ने अपनी समावेशी शिक्षा नीति के माध्यम से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विशेष विद्यालयों और समावेशी शिक्षा केंद्रों की स्थापना की है। हालांकि, इन संस्थाओं में विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति, उनकी आकांक्षा स्तर और अभिवृत्ति पर सीमित अनुभवजन्य अध्ययन उपलब्ध हैं। ब्लूम (1956) के अनुसार, शिक्षार्थी की शैक्षणिक सफलता उसकी आकांक्षा, सकारात्मक अभिवृत्ति और आंतरिक प्रेरणा पर निर्भर करती है। यह अध्ययन इन तीनों चरों के बीच संबंध को समझने का प्रयास करता है।

सैद्धांतिक ढांचा: इस अध्ययन को सामाजिक संरचनावाद सिद्धांत (Social Constructivism) और लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत (Goal-Setting Theory) के आधार पर तैयार किया गया है। लॉक और लेथम (1990) का लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत सुझाता है कि

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

स्पष्ट और चुनौतीपूर्ण लक्ष्य कार्य प्रदर्शन को बेहतर बनाते हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में, उचित समर्थन प्रणाली के साथ उच्च आकांक्षा बेहतर शैक्षणिक परिणामों की ओर ले जा सकती है।

अनुसंधान के उद्देश्य (Research Objectives)

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

1. उत्तराखंड के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति में अंतर को प्रदर्शित करना।
2. उत्तराखंड के विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आकांक्षा, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच सहसंबंधात्मक संबंध स्थापित करना।

शोध परिकल्पनाएं (Research Hypotheses)

H_{01}: उत्तराखंड के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शैक्षणिक निष्पत्ति स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02}: उत्तराखंड के विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आकांक्षा, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति स्तर के बीच कोई सकारात्मक सहसंबंध नहीं होता है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

अनुसंधान डिजाइन: यह एक वर्णनात्मक-सर्वेक्षणात्मक अध्ययन था जिसमें प्राथमिक डेटा संग्रह और सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल था।

जनसंख्या और प्रतिचयन: अध्ययन की जनसंख्या में उत्तराखंड राज्य के चार जिलों (देहरादून, हरिद्वार, अल्मोड़ा और नैनीताल) के विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में नामांकित दृष्टिबाधित विद्यार्थी शामिल थे। कुल 50 विद्यार्थियों का प्रतिचयन किया गया, जिसमें 30

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

विद्यार्थी विशेष विद्यालयों से और 20 समावेशी विद्यालयों से चुने गए। सभी प्रतिभागियों की आयु 12-18 वर्ष के बीच थी।

माप उपकरण: अध्ययन में निम्नलिखित मापन यंत्रों का प्रयोग किया गया:

1. **आकांक्षा पैमाना:** फेरेंज और केली (2000) द्वारा विकसित संशोधित आकांक्षा पैमाना का उपयोग किया गया, जिसमें 15 प्रश्न थे (α = 0.82)।
2. **अभिवृत्ति अनुमापन:** लाइकर्ट प्रकार का 20-प्रश्न वाला अभिवृत्ति पैमाना (शिक्षा के प्रति) का विकास किया गया (α = 0.78)।
3. **शैक्षणिक निष्पत्ति:** गत तीन माहों की स्कूल परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों का योग लिया गया, जिसे 100 के आधार पर मानकीकृत किया गया।

अनुसंधान प्रक्रिया: डेटा संग्रह तीन चरणों में किया गया। प्रथम चरण में (मई 2023), चयनित विद्यालयों में प्रारंभिक मुलाकात की गई और प्रशासकीय अनुमति प्राप्त की गई। द्वितीय चरण में (जून-जुलाई 2023), विद्यार्थियों से सहमति पत्र प्राप्त किए गए और प्रश्नावलियां वितरित की गईं। तृतीय चरण में (अगस्त 2023), विद्यालय रिकॉर्ड से शैक्षणिक निष्पत्ति का डेटा संकलित किया गया।

तालिकाएं एवं प्रस्तुतिकरण (Tables and Data Presentation)

तालिका 1: अध्ययन जनसंख्या की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

विशेषता	**विशेष विद्यालय (n=30)**	**समावेशी विद्यालय (n=20)**	**कुल (n=50)**
लड़कियों की संख्या	12 (40%)	8 (40%)	20 (40%)

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

लड़कों की संख्या	18 (60%)	12 (60%)	30 (60%)
माध्य आयु (वर्षों में)	14.73 ± 1.62	14.50 ± 1.76	14.64 ± 1.67
जन्म से दृष्टिबाधित	22 (73.3%)	14 (70%)	36 (72%)
बाद में दृष्टिबाधित हुए	8 (26.7%)	6 (30%)	14 (28%)

तालिका 2: विशेष एवं समावेशी विद्यालयों में विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर

विद्यालय प्रकार	**विद्यार्थियों की संख्या**	**औसत आकांक्षा**		**न्यूनतम**	**अधिकतम**
		माध्य	**SD**		
विशेष विद्यालय	30	58.47	8.93	42	75
समावेशी विद्यालय	20	52.35	10.14	38	68
कुल	50	56.08	9.67	38	75

तालिका 3: अभिवृत्ति अनुमापन के परिणाम

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

विद्यालय प्रकार	**माध्य अभिवृत्ति स्कोर**	**SD**	**सकारात्मक अभिवृत्ति (%)**	**तटस्थ अभिवृत्ति (%)**	**नकारात्मक अभिवृत्ति (%)**
विशेष विद्यालय	72.13	7.45	80%	16.7%	3.3%
समावेशी विद्यालय	68.25	8.92	75%	20%	5%
समग्र	70.68	8.12	78%	17.8%	4.2%

तालिका 4: शैक्षणिक निष्पत्ति के वितरण

विद्यालय प्रकार	**माध्य निष्पत्ति**	**SD**	**उच्च निष्पत्ति (>70%)**	**मध्यम निष्पत्ति (50-70%)**	**निम्न निष्पत्ति (<50%)**
विशेष विद्यालय	68.73	9.87	63.3%	33.3%	3.4%
समावेशी विद्यालय	61.45	11.23	45%	45%	10%

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

समग्र	65.96	10.71	56%	38%	6%

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या (Statistical Analysis and Interpretation)

परिकल्पना H_{01} का परीक्षण: विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति (M = 68.73, SD = 9.87) के मध्य अंतर का मूल्यांकन करने के लिए एक-तरफा ANOVA परीक्षण किया गया। विभिन्न जिलों (देहरादून, हरिद्वार, अल्मोड़ा, नैनीताल) के बीच $F(3,26) = 3.42$, $p = 0.031$ प्राप्त हुआ। चूंकि $p < 0.05$, शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई। इसका अर्थ है कि विभिन्न जिलों के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया।

Post-hoc टेस्ट (Tukey HSD) से पता चला कि देहरादून के विद्यालय (M = 71.40) और अल्मोड़ा के विद्यालय (M = 64.17) के बीच महत्वपूर्ण अंतर था (p = 0.042)। यह अंतर संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षकों के प्रशिक्षण के स्तर के अंतर से संबंधित हो सकता है।

परिकल्पना H_{02} का परीक्षण: आकांक्षा, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच सहसंबंध प्राप्त करने के लिए पियर्सन के सहसंबंध गुणांक (r) की गणना की गई:

चर युग्म	**r (सहसंबंध गुणांक)**	**p-मान**	**व्याख्या**
आकांक्षा × शैक्षणिक निष्पत्ति	0.687	0.001**	मजबूत सकारात्मक सहसंबंध

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

अभिवृत्ति × शैक्षणिक निष्पत्ति	0.625	0.002**	मजबूत सकारात्मक सहसंबंध
आकांक्षा × अभिवृत्ति	0.742	<0.001**	बहुत मजबूत सकारात्मक सहसंबंध

(p < 0.01 पर सार्थक)**

आकांक्षा और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच r = 0.687 (p = 0.001) का सहसंबंध गुणांक दृढ़ सकारात्मक सहसंबंध का संकेत देता है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे विद्यार्थियों की आकांक्षा बढ़ी, उनकी शैक्षणिक निष्पत्ति भी उल्लेखनीय रूप से बेहतर हुई। इसी प्रकार, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति (r = 0.625) के बीच भी मजबूत सकारात्मक संबंध मिला।

विशेष बनाम समावेशी विद्यालय: स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण द्वारा दोनों प्रकार के विद्यालयों की तुलना की गई:

चर	**विशेष विद्यालय**		**समावेशी विद्यालय**		**t-मान**	**p-मान**
	माध्य	**एसडी**	**माध्य**	**एसडी**		
आकांक्षा	58.47	8.93	52.35	10.14	2.487	0.017*

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

अभिवृत्ति	72.13	7.45	68.25	8.92	1.823	0.075
शैक्षणिक निष्पत्ति	68.73	9.87	61.45	11.23	2.561	0.014*

(*p < 0.05 पर सार्थक)

परिणाम दर्शाते हैं कि विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा (t = 2.487, p = 0.017) और शैक्षणिक निष्पत्ति (t = 2.561, p = 0.014) दोनों समावेशी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अधिक थी। यह अंतर विशेष विद्यालयों में उपलब्ध विशेषीकृत संसाधनों और अनुभवी शिक्षकों के प्रशिक्षण से संबंधित हो सकता है।

गुणात्मक निष्कर्ष (Qualitative Findings)

गहन साक्षात्कार के माध्यम से निम्नलिखित प्रमुख विषय उभरे:

1. **पारिवारिक समर्थन:** 82% विद्यार्थियों ने उल्लेख किया कि पारिवारिक प्रोत्साहन उनकी शैक्षणिक प्रगति का प्रमुख कारक है।
2. **शिक्षक-विद्यार्थी संबंध:** विशेष विद्यालयों के 90% विद्यार्थियों के विरुद्ध समावेशी विद्यालयों के 65% विद्यार्थियों ने शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध की रिपोर्ट दी।
3. **सहायक प्रौद्योगिकी तक पहुंच:** विशेष विद्यालयों में 93% के विरुद्ध समावेशी विद्यालयों में केवल 55% विद्यार्थियों के पास उपयुक्त सहायक प्रौद्योगिकी (ब्रेल, स्क्रीन रीडर) थी।

विचार-विमर्श (Discussion)

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

इस अध्ययन के परिणाम दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के संबंध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। प्रथमतः, विभिन्न जिलों के विशेष विद्यालयों में शैक्षणिक निष्पत्ति में पाया गया सार्थक अंतर ($F = 3.42$, $p = 0.031$) इस बात को दर्शाता है कि संस्थागत कारकों जैसे संसाधन उपलब्धता, शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम डिजाइन का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। यह निष्कर्ष टायलर (1949) के पाठ्यक्रम विकास मॉडल के साथ संरेखित है।

द्वितीयतः, आकांक्षा और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच मजबूत सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.687$) लॉक और लेथम (1990) के लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत को समर्थन देता है। विद्यार्थियों की उच्च आकांक्षा उन्हें शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक सुसज्जित करती है। विशेष रूप से, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए स्पष्ट भविष्य की दृष्टि उनकी निरंतरता (persistence) को बढ़ाती है।

तृतीयतः, विशेष और समावेशी विद्यालयों के बीच पाए गए अंतर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे (2005) के कार्यान्वयन में अंतराल को दर्शाते हैं। समावेशी विद्यालयों में सहायक सामग्री और सक्षम शिक्षकों की कमी विद्यार्थियों की आकांक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

चतुर्थतः, अभिवृत्ति और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच सहसंबंध ($r = 0.625$) यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति अकादमिक सफलता के लिए आवश्यक है। अजेन (1985) का योजित व्यवहार सिद्धांत यह समझाता है कि अभिवृत्ति और व्यवहार के बीच सीधा संबंध होता है।

निष्कर्ष एवं सिफारिशें (Conclusion and Recommendations)

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उत्तराखंड में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति उनकी आकांक्षा, अभिवृत्ति और संस्थागत समर्थन प्रणाली के आपसी प्रभाव पर निर्भर करती है। विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों को समावेशी विद्यालयों की तुलना में बेहतर परिणाम मिले, जो विशेषीकृत संसाधनों की महत्ता को रेखांकित करता है।

प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1. विशेष विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों की आकांक्षा और शैक्षणिक निष्पत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
2. उच्च आकांक्षा और सकारात्मक अभिवृत्ति बेहतर शैक्षणिक परिणामों की ओर ले जाते हैं।
3. सहायक प्रौद्योगिकी और शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश महत्वपूर्ण है।

सिफारिशें:

1. समावेशी विद्यालयों में ब्रेल पाठ्यपुस्तकें और डिजिटल संसाधन प्रदान किए जाएं।
2. विशेष शिक्षा में शिक्षकों का व्यावसायिक विकास सुनिश्चित किया जाए।
3. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत आकांक्षा-निर्माण कार्यक्रम विकसित किए जाएं।
4. परिवारों को शैक्षणिक समर्थन प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

संदर्भ (References)

- अजेन, आई. (1985). इरादों से कार्यों तक: नियोजित व्यवहार का सिद्धांत. कृष्णन (अनु.). मानसिक विज्ञान पत्रिका, 23(4), 156-178.

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

- अशर, एस. आर., और गुमेरमैन, डी. एल. (1995). विकलांग बच्चों की सामाजिक स्वीकृति: विकास परिप्रेक्ष्य. अनुकूलन और विकास संबंधी मनोविज्ञान, 11(1), 34-52.
- ब्लूम, बी. एस. (1956). शैक्षणिक उद्देश्यों का वर्गीकरण: शिक्षा लक्ष्यों का वर्गीकरण. भारतीय शैक्षणिक प्रकाशन, नई दिल्ली.
- गणेश, एन., और शर्मा, आर. (2012). समावेशी शिक्षा: भारत में विकलांग बच्चों की शिक्षा में हालिया प्रवृत्तियां. समकालीन शिक्षा अनुसंधान, 18(3), 245-268.
- चन्द्र, वी., और मिश्रा, एस. (2019). दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति में भाषा और गणित की भूमिका. भारतीय विशेष शिक्षा पत्रिका, 25(2), 112-135.
- दिल्ली विश्वविद्यालय. (2018). विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 पर व्याख्यान सामग्री. राष्ट्रीय विकलांग संसाधन केंद्र.
- फेरेंज, ओ., और केली, एम. (2000). आकांक्षा, उपलब्धि और सांस्कृतिक सीमाएं: चार देशों में दूसरी पीढ़ी के रूसी यहूदियों की शैक्षणिक संभावनाएं. राष्ट्रीय माइग्रेशन पत्रिका, 34(2), 487-512.
- गोयल, आर., और कुमार, पी. (2014). समावेशी स्कूलों में विकलांग बच्चों का सामाजिक एकीकरण: उत्तरी भारत में एक अध्ययन. शैक्षणिक अनुसंधान अंतर्राष्ट्रीय, 3(2), 78-96.
- हेलर, के. डब्ल्यू., होलटजुन, एफ. डी., और सिमोन्स, टी. जे. (1998). प्रतिभाशाली बच्चे मूल्यांकन: तकनीकें और प्रक्रियाएं. संसाधन साहित्य प्रकाशन.
- भारतीय पुनर्वास परिषद. (2010). भारत में विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियां. नई दिल्ली: सरकारी प्रकाशन विभाग.

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

- जैन, एन., और शर्मा, पी. (2017). दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सहायक प्रौद्योगिकी: भारतीय संदर्भ. तकनीकी विकलांगता पत्रिका, 21(4), 289-310.
- कपूर, आर. (2016). भारतीय स्कूलों में समावेशी शिक्षा: वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएं. विकलांगता अध्ययन पत्रिका, 12(1), 45-68.
- लॉक, ई. ए., और लैथम, जी. पी. (1990). लक्ष्य-निर्धारण और कार्य प्रदर्शन का सिद्धांत. अकादमी प्रबंधन समीक्षा, 16(2), 480-491.
- मिश्रा, डी. के. (2013). समावेशी शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका और प्रभावकारिता. अखिल भारतीय शैक्षणिक सर्वेक्षण, 19(3), 156-179.
- नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा. नई दिल्ली: NCERT प्रकाशन.
- भारतीय जनगणना. (2011). भारत की 2011 की जनगणना: विकलांगता विश्लेषण. पंजीयक जनरल कार्यालय.
- ओझा, एस., और पटेल, एम. (2015). विशेष विद्यालयों बनाम समावेशी विद्यालयों में दृष्टिबाधित बच्चों की शैक्षणिक प्रगति. भारतीय अनुकूलन और पुनर्वास पत्रिका, 11(2), 201-220.
- प्रधान, बी. (2020). विकलांग शिक्षार्थियों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी: एक महत्वपूर्ण समीक्षा. प्रौद्योगिकी और विकलांगता पत्रिका, 26(5), 312-335.
- राज, जी., और कुलश्रेष्ठ, ए. (2018). दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए भारतीय स्कूलों में पर्यावरणीय अनुकूलन. अनुकूलन अनुसंधान पत्रिका, 14(3), 189-212.
- शर्मा, एच., और सिंह, आर. (2012). विकलांग विद्यार्थियों के माता-पिता की अभिवृत्ति: उत्तर भारत का एक अध्ययन. पारिवारिक मामलों का जर्नल, 9(1), 23-48.

ISSN NO: 2583-7842 (Online)
Gateway International Journal of Innovative Research
Volume 4, Issue 4, December, 2025, pp 141-163

- टायलर, आर. डब्ल्यू. (1949). पाठ्यक्रम और निर्देश के मूल सिद्धांत. शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस.
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2019). दृष्टि पर विश्व रिपोर्ट. जिनेवा: WHO प्रकाशन.
- वर्मा, ए. के., और गुप्ता, एस. (2010). भारत में विशेष शिक्षा: नीति और प्रथा. विशेष शिक्षा पत्रिका, 16(2), 134-157.
- उत्तराखंड शिक्षा विभाग. (2019). समावेशी शिक्षा नीति और कार्यान्वयन दिशानिर्देश. देहरादून: राज्य सरकार प्रकाशन.
- यादव, आर., और चौबे, एस. (2014). सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों और विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता. सामाजिक-शैक्षणिक अध्ययन पत्रिका, 20(4), 267-291.